ईश्वरीय संग के रंगों में रंगे रहना ही सच्ची होली मनाना है

सत्-चित्-आनन्द स्वरूप शिव के ज्ञान-गुणों से अलंकारी बने रहना ही सच्ची-सच्ची होली मनाना है। इससे उत्पन्न उमंग-उत्साह जीवन को शीतल-सुखदायी बनाता जायेगा। मायावी सभी विकारों के दुःखों का रंग स्वत: उतर जायेंगे। ज्ञान-योग-धारणा-सेवा को अपनाने से अन्य आत्मायें भी पवित्र-सुखी होने लगेंगी। सद्विचारों के साथ इस पावन पर्व को मनाने पर आपसी वैर-भाव, राग-द्वेष मिट जाते हैं। 'होनी थी वे बातें हो गयी' - इस भाव से होली मनाई जाये तो नये साल की शुरुआत शुभ कर्मों से होगी।

होली सारे भारत के साथ विश्व का मंगलोत्सव है। इस समय पेड़-पौधों के साथ तन और मन भी आभायुक्त हो जाते हैं। अनाज की बालियों को 'होला' कहा जाता है। होली की आग में नये अनाज की बालियाँ भून कर सगुन के रूप में बाँटे जाने के कारण ही इस त्योहार का नाम 'होली' पड़ा है। अन्न को संस्कारित करके स्वीकार किये जाने के कारण होली उच्च आदर्शों व संस्कृति की संवाहक है। बसन्त में सूर्य उत्तरायण होकर समूची प्रकृति में उल्लास, यौवन और नई प्रेरणायें भरता हैं। उमड़-घुमड़ कर वातावरण में पवित्रता और सम्पन्नता आने से यह समय आध्यात्मिक उत्थान के लिए बड़ा उपयोगी होता है।

होली ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ नृसिंह के प्रकटीकरण से भी सम्बन्धित है। इसी दिन दंभ और आतंक के पर्याय हिरण्यकश्यप और होलिका के वध और भक्त प्रहलाद के सदाशयता की विजय हुई थी। यदि मनुष्य का पुरुषार्थ दुष्टता के समक्ष बौना पड़ जाता है तो उसकी अटूट श्रद्धा को सफल करने के लिए सर्व समर्थ खुदा, खुद आगे बढ़कर आते हैं अर्थात् आसुरीयता पर देवत्व की विजय होती है। इस दिन सभी धर्म, सम्प्रदाय व वर्ग के लोग ईर्ष्या-द्वेष भुलाकर होली के रंगों में रंग जाते हैं। गिले-शिकवे समाप्त कर विविधता में एकता का सूत्र पिरोते हैं। परन्तु आज रंगों की सतरंगी छटा बिखेरने की बजाय लोग दूसरों पर कीचड़ उछालते-कालिख से बदरंगा कर कड़वाहट बढ़ा देते हैं। यह पर्व तो हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा को उर्ध्वगामी दिशा देने वाला है। इसलिए अश्लील चेष्ठाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर ही नहीं देना चाहिए।

पर्वों की पवित्रता मिटते जाने से ही संसार स्वार्थपरता व अवसरवादिता में धँसता जा रहा है। लोग, भोगवादी नशे में धुत्त होकर इसे आत्मघाती प्रवृत्तियों का पर्व बनाते जा रहे हैं! साम्प्रदायिक दंगे उभारकर राष्ट्रीय अखण्डता के दामन पर दाग लगा रहे हैं। जबकि इस पर्व को स्नेह, सद्भाव तथा गरिमामय तरीके से मनाना चाहिए। राष्ट्रीय व सामाजिक समरसता कायम होने से ही भारत पुन: महान बन पायेगा।

दाऊ जी की लट्ठमार होली मथुरा-वृन्दावन में इतनी विख्यात हो गई है कि विदेशों से भी लोग देखने आते हैं। कहा जाता है कि जब श्रीकृष्ण, राधा के गांव जाया करते थे तो गोपियां रत्न-जड़ित, फूलों

से लिपेटी लाठियों से प्रेमवश मारा करती थीं। पश्चिम बंगाल को छोड़ भारत के हर कोने में होली जलाई जाती है। कहीं बसन्तोत्सव, कहीं नववर्ष के आगमन, कहीं विजय पर्व तो कहीं-कहीं जीवन-साथी के चयन के रूप में भी इसे मनाते हैं। श्रीकृष्ण का अपनी पटरानियों के साथ कुमकुम-केसर के रंगों से होली खेलने का श्रीमद्भागवत में प्रसंग आता है। पहले होली खेलने में फूलों के प्राकृतिक रंगों का ही प्रयोग होता था। अब तो मानसिक विकृतियों के कारण लोग गन्दी-गन्दी हरकतें भी करते हैं। जब तमोप्रधानता हो जाती तो हिरण्यकश्यप और होलिका जैसी ताकतों का साम्राज्य हो जाता है। स्वयं को भगवान कहलवाने के चक्कर में वे भक्त प्रहलाद जैसे भक्तों को सताते रहते हैं। उनसे बचाव के लिए ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण स्वयं की बुराइयों को भस्म कर पावन बनने की प्रतिज्ञा करते हैं। यज्ञ रक्षा का संकल्प लेते हैं। इसीलिए यह पर्व कूड़े-करकट को इकट्ठा कर जलाने के लिए नहीं परन्तु अन्दर की गंदगी मिटाने का प्रतीक है। गन्दी दुनिया वाले भंभोर को आग लगने से पहले परमपिता की सत्य पहचान दे करके अब से अपनी दूषित वृत्तियों को जला लेना चाहिए।

विविधता व आध्यात्मिकता से पूर्ण भारत में प्रत्येक पर्व अनेकों राज समाये रखते हैं। अब तो कमियों को कीचड़ की नालियों में डाल देना, भद्दे मजाक करना, बदला लेने की भावना रखना, त्वचा को रोगी बनाने वाले रंगीन रसायनों को पिचकारियों से उड़ेलना, होली के आध्यात्मिक स्वरूप को बिगाड़ने जैसा बन गया है। रंगों को 'खुशी' का प्रतीक माना जाता है। बाहरी रंगों के प्रयोग से तो खुशी होती ही है परन्तु प्रभु के परम सुखदायी संग के रंगों द्वारा अन्दर से रंग जाने पर किसी के गलत रंग का प्रभाव नहीं डाल पाता है। हमारे मुख से ईश्वरीय ज्ञान के सिवाय दूसरी बातें निकलनी नहीं चाहिए। भगवान का गुणगान करते हुए उनकी ही यादों में रहना चाहिए। सुबह आंख खुलते ही उनकी मधुर यादें रोम-रोम को रोमांचित कर जानी चाहिए। ऐसे उत्साह भरे आध्यात्मिक संकल्पों वालों के लिए सदा ही होली है। केवल होली के दिन ही उमंगों में नहीं रहिए परन्तु जीवन-पर्यन्त खुशियों की बहार छायी रहे। जब हम सदा तरंगित रहते तो बड़ी-बड़ी समस्यायें भी क्षणभर में गायब हो जाती हैं। स्फूर्ति से भरा मन क्षमता से चार गुना काम कर लेता है। कुछ भी हो जाये सकारात्मक तरंगों को नहीं छोड़िये तभी सदा सफल हो पायेंगे।

हमारा सारा ही जीवन उत्सव समान होना चाहिए। लोग कीचड़, मिट्टी, धूल, पानी उछालकर कहते हैं- 'बुरा न मानो होली है।' इस प्रकार से होली का मजाक न उड़ाकर विषाद व विपत्तियों में भी नाचते-गाते रहिए। होली तो कामनाओं से मुक्त हो, ईश्वरीय स्मृति बनाये रखने का पैगाम देती है। लोग वैर तो शिव पर चढ़ा देते परन्तु वैर-भाव भुलाकर शत्रुओं से गले नहीं मिल पाते हैं। किसी के प्रति किसी भी तरह का गिला-शिकवा हो तो सब कुछ भुलाकर उनसे ज्ञान-गुणों की होली खेलना ही सच्ची होली मनाना है। होली अर्थात् मैं परमपिता परमात्मा की हो गई। जब हम उन्हें अपना सर्वस्व बना लेते तो सारे मनोरथ सिद्ध होने लगते हैं। सभी से प्यार करने के कारण सबमें अपनेपन की सुगन्ध भर जाती है। फिर सर्व समस्याओं का समाधान अहं के समाप्त होते ही होने लगता है। अभिमान ही समाप्त हो जाये तो सारी

मानवता को एक सूत्र में पिरोना आसान हो जायेगा। होली में खरपतवार जलाने से अर्थ है कि मन में जो भी बुरी बातें हैं, व्यर्थ चिन्तन हैं, घृणा-द्वेष वा दूसरों की गलती निकालने की आदतें सभी भस्म हो जानी चाहिए। जैसे जलाने से समूल नाश हो जाता, वैसे ही होलिका दहन के साथ-साथ सारी नकारात्मकता नष्ट हो जानी चाहिए।

पूर्णमासी को होली जलाने से भाव है कि जीवन में पूर्णत्व प्राप्त करने के लिए प्राणपण से जुट जाना है। आत्मज्ञान के द्वारा जीवन में नये संस्कारों को धारण करें। होली आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न बनने का संदेश देने आती है। होली के समय चहुँओर हरियाली व समृद्धि का साम्राज्य छाया रहता है। इस बार होली अर्थात् होनी थी सो हो गई इसलिए सभी को हमजोली बनाते हुए होली (पवित्र) बनने का संकल्प लेना है। मन में व्याप्त सभी विकारों को जलाकर परमात्म याद की खुमारी से मन को उमंगों-तरंगों से भरपूर कर लेना चाहिए। किसी पर रंग डालने से भावार्थ है कि उसके पुराने रंग-रूप को बदलकर दिव्य संस्कारों द्वारा हर्षित करना। सूर्य की किरणें सप्तरंगी होती है तो हमारे हर विचारों का भी अलग-अलग रंग होता है। आत्मा के भी सात ही मौलिक गुण हैं तो आकाश में भी सप्त ऋषि मण्डल होता है। हमारे विविध विचार आत्मा के सातों गुणों को प्रकीर्ण करने लगे तो जीवन से इन्द्रधनुषी आभा दिखाई देती रहेगी। एकाग्रता की अनुभूतियों के समय ऐसे प्रभामण्डल साफ दिखाई देते हैं। दिव्य विचार ही हमारे आभा के निर्माता हैं।

आसुरी वृत्तियों के प्रयास अन्त में फीके ही पड़ते जायेंगे। परम सत्य परमात्मा के द्वारा असत्य की हार होकर ही रहेगी। कल्प के अंतिम काल अर्थात् संगमयुग पर निराकार परमात्मा का मानवी तन में वैसे ही अवतरण हुआ है मानो नरसिंहावतार। अब भगवान में सत्य भावना रखकर अहंकार को जीतने वालों की विजय पताका अवश्य फहरायेगी। विघ्न विनाशक परमात्मा द्वारा मन व प्रकृति की मैल धुलकर धवल साम्राज्य स्थापित होगा। इससे सबका दिल खुशियों में हिलोरे लेता रहेगा परन्तु आत्मिक वृत्ति बनाये बिना विश्व बन्धुत्व आ नहीं सकता है। अत: अब से ज्वाला स्वरूप, दैवी रूप बनाकर रूहानी खुशियों की पिचकारी से सब पर सद्गुणों का रंग बिखेरते रहिए। समीप वालों को शुभभावनाओं और परमात्म-पैगाम के रंग में ऐसा रंग दीजिए कि खुशियों भरा अलौकिक रंग कभी उतर न पावें।

ओम शान्ति